भगत रविदास – सबद १९
जल की भीति पवन का थमभा रक्त बुंद का गारा ॥
रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५९

जल की भीति पवन का थमभा रक्त बुंद का गारा ॥
हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां ॥
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥२॥
बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥
ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥६॥

सार: हम सुविधा बढ़ा सकते हैं, जोखिम घटा सकते हैं और आश्रय बना सकते हैं लेकिन हम स्वयं अपने अस्तित्व को सुरक्षित नहीं कर सकते। मूलतः सुरक्षा कमज़ोरी को निश्चितता की भावना में बदलने की एक कोशिश है। हम रिश्ते, दौलत और इज़्ज़त की दीवारें सिर्फ़ ज़िंदा रहने के लिए नहीं बल्कि हमेशा न रहने के डर को शांत करने के लिए भी बनाते हैं। हालाँकि, शारीरिक जीवन की एक सीमा होती है जिसे कोई भी रणनीति पार नहीं कर सकती जो समय और हमारी उपलब्धियों की परवाह नहीं करती है। हम जो कुछ भी जमा करते, बचाते और फैलाते हैं, वह अंततः 'साढ़े तीन हाथ' की क़ब्र में सिमट जाता है। यह प्रतीकात्मक सच्चाई हमें याद दिलाती है कि अंत में हम सब बराबर हैं और हमें यह पहचानने के लिए प्रेरित करती है कि हमारा विवेक ही वास्तव में एकमात्र ऐसी चीज़ है जिसे हम सच में सुरक्षित कर सकते हैं।

जल की भीति पवन का थ्मभा रक्त बुंद का गारा ॥
जल नींव है, सांस स्तंभ है और रक्त गारा है। यह दिखाता है कि हमारे शरीर कैसे बने हैं, जिनमें स्वाभाविक रूप से नाज़ुक तत्व लगे हैं जिससे हमारा शारीरिक अस्तित्व क्षणभंगुर हो जाता है।

हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥
हमारा शरीर, जो हड्डी-मांस-नाड़ियों से बना है, हमारी शुद्ध चेतना को एक पिंजरे में फंसे लाचार पक्षी की तरह घेरे हुए है। यह कल्पना हमें याद दिलाती है कि हमारी जीवन शक्ति के बावजूद, हम कमज़ोर हैं, अपने शारीरिक रूप और इंद्रियों से बंधे हुए हैं। (१)

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥
हे प्राणी, वास्तव में तुम्हारा क्या और मेरा क्या है? यह हमें अपने स्वामित्व के दावों पर सोचने के लिए चुनौती देता है क्योंकि जो कुछ भी हमें प्रिय है, वह इस क्षणभंगुर अस्तित्व में साँझा चेतना का ही अंश है।

जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे कोई पक्षी कुछ देर के लिए पेड़ पर आराम करता है वैसे ही यह पल हमारे अस्तित्व की क्षणिक प्रकृति का प्रतीक है, चाहे वह शारीरिक या मानसिक अनुभवों ही क्यों न हो। (१)(विराम)

राखहु कंध उसारहु नीवां ॥
दीवारें बनाने के लिए नींव रखी जाती है, यह उसको सुरक्षित करने के प्रयास को दर्शाता है जो स्वाभाविक रूप से नष्ट होने वाली है और जिसे स्थायी रूप से सुरक्षित नहीं किया जा सकता।

साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥२॥
एक क़ब्र सिर्फ़ साढ़े तीन हाथ ही लंबी होगी। यह हमारी साँझा नश्वरता की याद दिलाता है और पुष्टि करता है कि हम चाहे कितनी भी उपलब्धियां हासिल कर लें, अंत में सभी समान हैं। (२)

बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥
सुंदर बाल और सिर पर भव्य पगड़ी इस विचार की पुष्टि करते हैं कि दिखावे का आडंबर अक्सर हमें श्रेष्ठ होने का भ्रम देते हैं।

इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥
यह देह अंततः राख का ढेर बन जाएगी। यह शारीरिक रूप के अनिवार्य क्षय को दर्शाता है। यह दिखाता है कि जब हमारी नश्वरता की वास्तविकता का सामना होता है तब घमंड निरर्थक हो जाता है। (३)

ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥
किसी के पास भव्य महल और आकर्षक साथी हो सकते हैं। यह सूची सांसारिक सफलता के बारे में भ्रम के संकेतों की पहचान करती है जो दर्दनाक लगाव के बंधन का कारण बन सकते हैं।

राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥
सर्वव्यापी चेतना पर चिंतन के बिना, जीवन का खेल हार जाता है। यह एक अनुस्मारक है कि आध्यात्मिक मूल्यों के बिना भौतिक धन का पीछा करने से सच्ची संतुष्टि के अवसर छूट जाते हैं। (४)

मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
जीवन का खेल हार जाता है। मेरी सामाजिक जाति को नीचा माना जाता है, मेरा कुल साधारण है और मेरे जन्म को निम्न माना जाता है। यह कठोर सामाजिक स्तरीकरण के भेदभाव और बाहरी पहचान से जुड़े लांछन को दर्शाता है।

तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥६॥

मैंने सर्वव्यापी, सर्वोच्च सत्ता की शरण ली है, रविदास चमार कहते हैं। यह गहन अंतर्दृष्टि हमें याद दिलाती है कि सच्चा ज्ञान हमारे सबसे गहरे दुःख से भी ऊपर उठ, उसके भी पार चला जाता है। (५)(६)

तत्त्व: भक्त रविदास जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति पर एक गहरा चिंतन प्रस्तुत करते हैं जो हमें अहंकार की व्यर्थता का सामना करने के लिए मजबूर करता है। वह हमें मानव शरीर को उसके मूल तत्वों, पानी, हवा और खून में,विघटित कर, शारीरिक अस्तित्व की अस्थिरता पर विचार करने के लिए आमंत्रित करते हैं ताकि शारीरिक रूप की अंतर्निहित नज़ाकत को समझा जा सके। जबकि समाज व्यक्तियों को बाहरी कारकों के आधार पर आंक सकता है, सच्ची विरासत और जीवन शक्ति एक उच्च चेतना के साथ जुड़ने से उभरती है। यह जुड़ाव हमें स्वामित्व के प्रति अपने लगाव को चुनौती देने और अहंकार की पकड़ को कम करने के लिए प्रेरित करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com